वर्ष :: 34 अंक : 36
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

बोकारो :: रविवार, 09 जून, 2024 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मेनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

देश में फिर मोदी सरकार, पर अब आत्मचिंतन की दरकार

- विजय कुमार झा -

नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बन चुके हैं। हालांकि, केवल सत्ता सुख की खातिर अलग-अलग राजनीतिक विचारधाराओं के नेताओं ने इंडी गठबंधन बनाकर पूरी चतुराई के साथ मोदी को घेरने की कोशिश की। विरोधियों ने 'झूठ' और 'फरेब' के सहारे अपने चक्रव्यूह में फांसकर पिछले दो चुनावों की तरह अपने दम पर पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाने वाली भारतीय जनता पार्टी को अकेले सरकार बनाने से जरूर रोक दिया। लेकिन, मोदी ने यह चुनाव भी एनडीए (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन) के नाम पर लड़ा, उसे सफलता भी मिली और अंततः नरेंद्र मोदी तीसरी बार एनडीए संसदीय दल के नेता के रूप में लगातार तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बन गए। एनडीए के सभी 293 लोकसभा सांसदों व मुख्यमंत्रियों की मौजूदगी में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र में आत्मनिर्भर सरकार पर मुहर लग गई। दरअसल, लोकसभा के चुनावी नतीजे इस बार बेहद चौंकाने वाले रहे। भाजपा जहां 400 पार का नारा देकर चुनाव मैदान में थी, वहीं चुनाव खत्म होने के तत्काल बाद एग्जिट पोल के अनुमान में भी बड़े-बड़े दावे किये गए, लेकिन नतीजा उसके विपरीत आया। हालांकि, एनडीए (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन) को देश के लगभग 64 करोड़ मतदाताओं ने बहुमत देते हुए लगातार तीसरी बार सरकार बनाने का मौका जरूर दे दिया, लेकिन भारतीय जनता पार्टी के लिए ये नतीजे बेहद चिंताजनक हैं। क्योंकि, वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में 303 सीटें जीतने वाली भाजपा इस बार अकेले अपने दम पर बहुमत हासिल करने से चूक गई है।

543 सीटों वाली लोकसभा में अकेले बहुमत के लिए भाजपा को कम से कम 272 सीटें चाहिए थीं, लेकिन वह महज 240 सीटों पर ही सिमट गई। हालांकि, 293 सीटों के साथ केन्द्र में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए की सरकार बन गई है। लेकिन, 2014 और 2019 में प्रचंड बहुमत प्राप्त करने वाली भाजपा इस बार बहुमत से भी 32 सीटें लाने से क्यों चूक गई, इस पर पार्टी के शीर्ष नेतृत्व को आत्म-चिन्तन करने की जरूरत है।

दुनिया भर में गूंजी अयोध्या की हार : अयोध्या में भाजपा की हार देश के साथ ही पूरी दुनिया में गूंज रही है। सोशल मीडिया पर लोग अयोध्यावासियों को (शेष पेज- 7 पर)

केंद्रीय नेतृत्व की कार्यशैली पर उठे सवाल

चुनाव नतीजे आने के बाद भाजपा के बीच उम्मीदवारों के चयन, नेताओं के व्यवहार और केंद्रीय नेतृत्व की कार्यशैली को लेकर सवाल उठने लगे हैं। चुनाव से ठीक पहले टिकट वितरण में गड़बड़ी को लेकर पार्टी के भीतर असंतोष का संकेत देने वाली भी कुछ बातें सामने आई थी। दरअसल, अनुभवी पार्टी कार्यकर्ताओं की जगह बाहरी लोगों को तरजीह दी गई, जिससे जमीनी स्तर पर चुनाव अभियान कमजोर हुआ। चुनावी नतीजों से यही माना जा रहा है कि केवल सत्ता-सुख पाने की खातिर बने इंडिया गठबंधन के नेता राहुल-अखिलेश की उत्तर प्रदेश में बनी जोड़ी और पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की मोर्चाबंदी मोदी की गारंटी पर भारी पड़ गई और इंडिया गठबंधन चमत्कारी अंदाज में 234 सांसदों के साथ मजबूत विपक्ष बनकर सामने आया है।

अति आत्मविश्वास से आघात

2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने हिन्दी भाषी क्षेत्र में 71 सीटें गंवाई है, जबकि पश्चिम और दक्षिण भारत में यह मजबूत हुई है। उत्तर प्रदेश में 80 सीटों में से भाजपा को इस बार महज 30 सीटें मिलीं। उसे 32 सीटों का नुकसान उठाना पड़ा है। 2019 के चुनाव में 25 सीटों में से राजस्थान में भाजपा ने 24 सीटें जीती थी, जबकि इस बार उसे 14 सीटें मिलीं। हरियाणा में 10 में से भाजपा केवल 5 सीटें बचा पाई, जबकि 5 सीटें उसे गंवानी पड़ी है। बिहार में कुल 40 सीटों में से 2019 के चुनाव में भाजपा ने 17, जदयू ने 16, लोजपा ने 6 और कांग्रेस ने 1 सीट जीती थी, जबकि इस बार भाजपा को 12, जदयू को 12, लोजपा को 5, राजद को 4, कांग्रेस को 3, सीपीआई (एमएल) को 2, हम को 1 और निर्दलीय को 1 सीट मिली है। हालांकि, 10 वर्षों तक सत्ता में रहने के बावजूद राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा का वोट शेयर 1 % भी नहीं घटा है। लेकिन, इस चुनाव में उसे जो सीटों का नुकसान हुआ है, उसका सबसे बड़ा कारण पार्टी के ही जिम्मेदार बड़े नेताओं का अति आत्मविश्वास माना जा रहा है। क्योंकि, जिस तरह से स्थानीय और पार्टी के समर्पित कार्यकर्ताओं की अनदेखी करते हुए टिकट का बंटवारा किया गया, उससे भाजपा को बड़ा नुकसान हुआ। इस चुनावी नतीजे ने जहां भाजपा कार्यकर्ताओं में अंदर ही अंदर उपजे असंतोष को उजागर किया है, वहीं संगठन की कमियों का भी पर्दाफाश हुआ है।

संघ को लेकर नड्डा का बयान पड़ा भारी

कहा जा रहा है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस बार भाजपा के चुनाव अभियान के प्रति उदासीन रहा। खासकर, चुनाव के बीच ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के साथ संबंधों के बारे में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा का बयान आरएसएस कार्यकर्ताओं को चुभने वाला था। दरअसल, जेपी नड्डा ने एक अखबार को दिए अपने इंटरव्यू में 'आरएसएस' को एक 'वैचारिक मोर्चा' या 'आइडियोलॉजिकल फ्रंट' बताया था और यह भी कहा था कि बीजेपी अपने आप चलती है, हम और अधिक सक्षम हो गए हैं। हालांकि, नड्डा ने स्पष्टीकरण दिया था कि उनके बयान को गलत तरीके से पेश किया गया। लेकिन, आरएसएस को नजरअंदाज कर भाजपा नेतृत्व ने कार्यकर्ताओं के बीच एक गलत संदेश दिया।

वर्णन विशेष पर्यावरण-संरक्षण की बातें बस हवा-हवाई, तापमान में अप्रत्याशित बढ़ोतरी बनी चिंता का सबब

बीते 5 वर्षों में इस बार का मई-जून सबसे गर्म, लगातार बढ़ रहा प्रदूषण

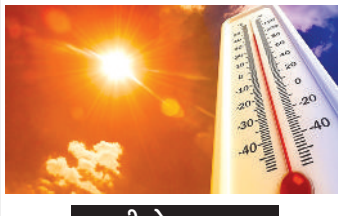

- डी. के. वत्स -

बोकारो : 5 जून को विश्व ने पर्यावरण दिवस मनाया। मनाना भी चाहिए, लेकिन इसे महज एक दिन का फोटोग्राफी इवेंट न बनाकर इसके प्रति वास्तविक संजीदगी नहीं आएगी और जब तक हर दिन प्रकृति रक्षा को लेकर संकल्पित हम नहीं होंगे, पर्यावरण दिवस मनाने की सार्थकता कभी पूरी नहीं होगी। ऐसा इसलिए हम कह रहे हैं, क्योंकि दिन-ब-दिन हमारे पर्यावरण की स्थिति बद से बदतर होती चली जा रही है। प्रदूषण का स्तर कम होने की बजाय लगातार बढ़ता ही चला जा रहा है। जिस अनुपात में जनसंख्या बढ़ रही है, उससे अधिक सड़कों पर गाड़ियों का बोझ और उनसे निकलने वाले धुएं के अलावा कल-कारखाने से वातावरण के लिए जहर उगलतीं विमनियां जैसे कई कारक है जो आज अप्रत्याशित बढ़ोतरी का कारण बने हैं। औद्योगिक मामले में काफी संपन्न बोकारो जिले की भी यही दुर्दशा है। यह लगातार बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन का ही दुष्परिणाम है कि मौसम का मिजाज लगातार बदलता जा रहा है और हम प्रकृति का कोपभाजन बन रहे हैं। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक बीते पांच वर्षों में बोकारो जिले में इस साल मई का महीना अब तक सबसे अधिक गर्म दर्ज किया गया है और जून में भी आने वाले दिनों में फिलहाल प्रचंड गर्मी और लू के थपेड़ों से राहत की कोई संभावना नहीं दिख रही है। तापमान में अप्रत्याशित बढ़ोतरी चिंता का कारण बनी है।

जानिए... किस वर्ष कितना रहा अधिकतम तापमान

मौसम विज्ञान केंद्र रांची से प्राप्त आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2020 के मई महीने में 26 तारीख को सर्वाधिक 40.1 डिग्री सेल्सियस व जून में 8 को 37.1 डिसे अधिकतम तापमान रहा। 2021 में 5 मई को 39.5 डिग्री, तो जून में 7-8 तारीख को 37.5 डिग्री सबसे ज्यादा तापमान था। इसी प्रकार, वर्ष 2022 में मई महीने का सबसे अधिकतम तापमान 17-18 तारीख को 41.1 डिग्री रिकार्ड किया गया था। जबकि, जून महीने में 4 तारीख को सर्वाधिक 42.5 डिग्री रहा। वहीं, वर्ष 2023 के मई महीने में 21-22 को अधिकतम 43.1 डिग्री से. तथा 15 जून को उस महीने का अधिकतम तापमान 43.1 डिग्री ही दर्ज किया गया था। जबकि, इस साल मई महीने की शुरूआत ही पहली तारीख को 42.5 डिग्री सेल्सियस से हुई थी। चार दिन बाद ही 5 मई को अधिकतम तापमान 44.1 तथा 29 मई को भी 44.1 डिग्री सेल्सियस रहा। 30 मई को जिले का अधिकतम तापमान लगभग 45 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था, जो पिछले तीन वर्षों में मई-जून की अवधि में अधिकतम तापमान का सर्वाधिक आंकड़ा रहा। वहीं, इस बार 7 जून को अधिकतम तापमान 44 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। मौसम विभाग ने अगले लगभग एक हफ्ते तक हीट वेव को लेकर यलो अलर्ट जारी किया है।

जल, जंगल, जमीन का नहीं हो रहा बचाव

एक्सपर्ट व्यू : अभिषेक आनंद
निदेशक, मौसम विज्ञान केन्द्र, रांची।

आज हम जितना भी प्राकृतिक प्रकोप झेल रहे हैं, उसके पीछे जल, जंगल और जमीन के संरक्षण को लेकर हमारी उदासीनता सबसे बड़ा कारण है। हर तरफ केवल कंक्रीट के जंगल ही बन रहे हैं। लोग 50 हजार से एक लाख तक की एसी लगा सकते हैं, लेकिन एक पेड़ नहीं लगा सकते। देश में इस वर्ष तापमान में अप्रत्याशित बढ़ोतरी का मुख्य कारण ग्लोबल फैक्टर के साथ-साथ लोकल फैक्टर भी हैं। तालाब, झील, नदी के संरक्षण को लेकर कोई उपाय नहीं किया जा रहा। अगर ऐसा किया गया होता तो निश्चय ही तापमान में 5 डिग्री सेल्सियस तक की कमी आई होती। प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ता जा रहा है। बोकारो जैसे औद्योगिक जिले में थर्मल पावर स्टेशन, सीमेंट फैक्ट्री, स्टील फैक्ट्री जैसे कारखाने धड़ल्ले से प्रदूषण फैला रहे हैं। केवल कागजों तक की प्रदूषण नियंत्रण की बातें दिख रही हैं। नदी, नालों में कारखाने का पानी छोड़ा जा रहा है। कुछ भी बेहतरी की ओर नहीं दिख रहा। लोगों में आत्मबोध का जागरण जरूरी है।

- संपादकीय -

पश्चिम बंगाल और चुनावी हिंसा

भाजपा विरोधी दलों के नहीं चाहते हुए भी केन्द्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नई सरकार का गठन हो चुका है। लेकिन, सात चरणों में सम्पन्न हुए इस चुनाव के दौरान हिंसा की जितनी घटनाएं पश्चिम बंगाल में हुईं, ऐसा किसी अन्य प्रदेश में नहीं हुआ। दरअसल, पश्चिम बंगाल में हिंसा और राजनीति एक दूसरे के पूरक माने जाते हैं। जब भी पश्चिम बंगाल में राजनीति की बात होती है तो पहले वहां की सियासी हिंसा की चर्चा होती है। देश के लगभग हर राज्य में चुनाव के दौरान हिंसा की छिटपुट घटनाएं होती हैं। लोकसभा के सम्पन्न हुए इस चुनाव में बिहार से भी हिंसा की कुछ खबरें सामने आईं, लेकिन पश्चिम बंगाल में हिंसा का नाता चुनाव से नहीं, बल्कि राजनीति से हो गया है। पश्चिम बंगाल में दशकों से राजनीतिक हिंसा की घटनाएं एक परंपरा सी बन गई है। आजादी के बाद से पश्चिम बंगाल में कई राजनीतिक दलों के नेतृत्व की सरकारें बनीं। इनमें दो दशकों से अधिक समय तक शासन करने वाली कांग्रेस और तीन दशकों से अधिक समय तक शासन करने वाली भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के नेतृत्व वाला वाम मोर्चा शामिल हैं। आज ममता बनर्जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की सरकार है। उक्त सभी सरकारों के शासन काल में राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं के बीच, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में हिंसक झड़पों की संस्कृति पिछले कुछ वर्षों में ही पैदा हुई है। पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा की घटनाओं ने काफी सुर्खियां बटोरी हैं। वहां किसी भी चुनाव में बम और बारूद का खेल बेखौफ खेला जा रहा है। दरअसल, पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा की शुरूआत नक्सल आंदोलन के साथ हुई। 1960 से 1970 के बीच शुरू हुई नक्सली हिंसा धीरे-धीरे राजनीतिक हिंसा में बदल गई। सरकारी आंकड़ों के अनुसार इन पांच दशकों में पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा में करीब 30 हजार से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं। पिछले दो दशकों में सबसे ज्यादा मौत सिंगूर और नंदीग्राम आंदोलन में हुईं। ममता बनर्जी के नेतृत्व में हुए नंदीग्राम और सिंगुर आंदोलन को पश्चिम बंगाल की सरकार ने जिस हिंसात्मक तरीके से दबाया, वह ताबूत में आखिरी कील साबित हुई और 34 साल की वामपंथी सरकार का पतन हुआ। लोगों को उम्मीद जगी थी कि अब सरकार बदलने के बाद पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा खत्म हो जाएगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। पंचायत चुनाव हो या विधानसभा-लोकसभा चुनाव, पश्चिम बंगाल में हिंसा कम नहीं हुई। अब तो बिना किसी चुनाव के भी राजनीतिक कार्यकर्ताओं की हत्या और उन पर हमले की घटनाएं आम बात हो गई है। लोकसभा के वर्तमान चुनाव में भी सत्ताधारी टीएमसी के कथित गुंडों ने जगह-जगह खूनी खेल खेला। विरोधी दल के कार्यकर्ताओं, यहां तक कि प्रत्याशियों को भी दौड़ा-दौड़ाकर पीटा गया और पुलिस मूकदर्शक बनी रही। सच कहें तो पश्चिम बंगाल में चुनावी हिंसा का जो दौर चल पड़ा है, वह स्वस्थ लोकतंत्र के लिए अत्यंत ही घातक है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

मोदी का ध्यान : हिन्दू-इतिहास में देश के लिए एक अहम मोड़

- मोद प्रकाश -
ब्रिसबेन, ऑस्ट्रेलिया

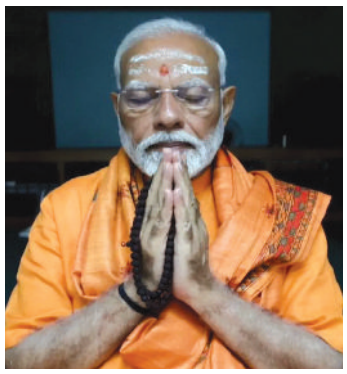

प्रधानमंत्री मोदी ने लगभग दो महीने लंबे थकाऊ चुनाव अभियान को समाप्त किया, जिसमें उन्होंने देशभर में लगभग 200 रैलियों को संबोधित किया और विभिन्न मीडिया हाउसेस को लगभग 80 टीवी इंटरव्यू दिए। पंजाब में अपनी आखिरी रैली के तुरंत बाद वे कन्याकुमारी के लिए रवाना हुए और विवेकानंद रॉक मेमोरियल में दो दिनों की ध्यान साधना के लिए गए। यह कोई सामान्य ध्यान साधना नहीं है जैसा कि हम सुनते और देखते हैं - यह वही स्थान है, जहां स्वामी विवेकानंद ने दो दिनों तक ध्यान किया था। उन्होंने वहां दो पूर्ण दिनों तक अकेले उपवास और ध्यान करने की योजना बनाई। जैसा कि हमेशा होता है, विपक्ष इस पर बड़ा हंगामा कर रहा है और संबंधित मीडिया और प्रभावशाली समूह सोशल मीडिया पर इस शोर को बढ़ा रहे हैं।

यह हिंदुओं के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ है। एक पूरे भारतीय उपमहाद्वीप का सर्वोच्च नेता खुलकर इस प्रकार एक मंदिर में दो दिनों तक ध्यान किया है, ऐसा हिंदवी स्वराज के बाद पहली बार हुआ है। यह भारत के लिए एक छत्रपति शिवाजी क्षण है। नरेंद्र मोदी हर्षवर्धन के बाद पूरे देश के पहले सनातनी नेता हैं, जिन्होंने समान भौगोलिक क्षेत्रफल का नियंत्रण हासिल किया है। ऐसा मैं इसलिए कहता हूं, क्योंकि छत्रपति शिवाजी ने एक बड़ा साम्राज्य बनाने की कोशिश की, लेकिन वर्धन साम्राज्य से तुलना करने पर उनका पूर्व और दक्षिण पर प्रभावी नियंत्रण नहीं था। महाराजा रणजीत सिंह उत्तरी भारत तक सीमित रहे, भले ही उन्होंने अफगानिस्तान तक के क्षेत्रों पर नियंत्रण किया था। स्वतंत्रता के बाद सभी प्रधानमंत्री केवल नाम और दिखावे में हिन्दू थे; लेकिन दिल और दिमाग में वे या तो हिन्दू विरोधी थे या गैर-हिन्दू।

गांधी ने सनातनी के रूप में कार्य किया, सनातनी संवेदनाओं का उपयोग किया, उसकी नकल की, गीता का प्रचार किया, अपने वस्त्र और सामाजिक संवाद में हिन्दू प्रतीकवाद का उपयोग किया- लेकिन उनका दिल हमेशा हिंदुओं के अपने ही देश में सहस्राब्दियों पुरानी पीड़ा और कष्टों से असंबद्ध रहा। वे भारतीय संत के वेश में अंग्रेजी शिक्षित बाहरी व्यक्ति थे। उन्होंने भारतीय दर्शन, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक धरोहर को सिर्फ पश्चिमी दृष्टिकोण से ही समझने की कोशिश की।

जवाहरलाल नेहरू के बारे में तो यही माना जाता है कि उन्होंने अपने जीवन भर भारत में पश्चिम के बौद्धिक उपनिवेशवाद के एजेंडा को आगे बढ़ाया। लाल बहादुर शास्त्री में एक भारतीय प्रधानमंत्री के लिए आवश्यक भारतीय दृष्टिकोण था। उनमें इसे प्रचारित और प्रसारित करने की हिम्मत और बौद्धिक साहस भी था, लेकिन उन्हें कोई परिवर्तन करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिला। जब तक वे प्रधानमंत्री बने, तब तक बहुत नुकसान हो चुका था और शास्त्री के पास इनमें से किसी को ठीक करने का समय नहीं था। इंदिरा गांधी के बारे में जानकार बताते हैं कि उन्होंने संविधान में 'धर्मनिरपेक्ष' और 'समाजवादी' जैसे विदेशी तत्वों को समाहित करने के लिए इसे हेरफेर किया था। संविधान का 42वां संशोधन इतना विशाल था कि इसे दूसरा संविधान माना जाता है। उस संशोधन के बाद, हिन्दू विरोधी और सनातन विरोधी भावनाएं इतनी सामान्य हो गईं कि बाद के प्रधानमंत्रियों ने किसी भी हिन्दू विरोधी कृत्य या कानून को असामान्य या भारत विरोधी नहीं माना।

राजीव गांधी ने इस प्रवृत्ति की परवाह नहीं की और शाह बानो मामले में सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को बदलने के लिए संविधान को बदलते समय जरा भी संशय नही दिखाया। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इस तरह की संवैधानिक उल्लंघन पर देश ने कोई प्रतिक्रिया नहीं देखी, क्योंकि यह कानून धर्मनिरपेक्षता के नाम पर पारित हुआ था। आगे वी.पी. सिंह ने इसी विभाजनकारी एजेंडा को अगले स्तर पर ले जाकर मंडल आयोग को लागू किया और नरसिम्हा राव ने इसे प्लेसेस ऑफ वर्शिप एक्ट और वक्फ बोर्ड संशोधन अधिनियम के साथ शीर्ष पर रखा। मनमोहन सिंह की यूपीए सरकार ने इस प्रवृत्ति को तेज करने और सनातन विरोधी कानूनों को अधिक कठोर बनाने की कोशिश की, जब उन्होंने अल्पसंख्यक अत्याचार विरोधी अधिनियम को पारित करने का प्रयास किया, जहां किसी भी हिन्दू-मुस्लिम विवाद में हिंदुओं को तब तक दोषी माना जाता, जब तक कि वे निर्दोष साबित नहीं होते।

इन 30-35 वर्षों के दौरान हिन्दू आर्थिक उदारीकरण, अधिक पैसे कमाने के अवसरों और विदेश में जाकर बसने के अवसरों के बारे में खुश थे। यह आरएसएस और बीजेपी ही थे, जो धर्मनिरपेक्ष नशे के 70 वर्षों के दौरान समझदार और संवेदनशील बने रहे और उनकी सनातन संवेदनाओं को इससे प्रभावित नहीं होने दिया। उन्होंने राम जन्मभूमि आंदोलन और इसी तरह की कई और आंदोलनों के माध्यम से हजारों वर्षों की सनातन आकांक्षाओं की रोशनी को जीवित रखा। वाजपेयी को प्रधानमंत्री के रूप में एक कार्यकाल मिला, लेकिन वे स्थिति को बदलने के लिए बहुत कुछ नहीं कर सके, क्योंकि वे उसी सनातन विरोधी तंत्र से घिरे थे, ...और एक कार्यकाल में इसे बदलना लगभग असंभव था। वाजपेयी ने भी कभी अपनी हिन्दू पहचान को उतनी खुलकर और निर्भीकता से प्रदर्शित नहीं किया, जितना मोदी कर सकते हैं।

मोदी की यह घटना कई मायनों में उल्लेखनीय है जब हम देखते हैं कि उन्होंने हिंदुओं के लिए अपने हिंदुत्व को प्रदर्शित करने का वातावरण कैसे बदला है। एक समय था, जब हिन्दू नेता मुस्लिम जनसंख्या को खुश रखने के लिए अपने हिंदुत्व को प्रदर्शित करने का साहस नहीं करते थे। हिन्दू जनसंख्या को तथाकथित धर्मनिरपेक्षता की शिक्षाओं ने एक ऐसी स्थिति में पहुंचा दिया, जहां हिन्दू अपने हिंदुत्व पर शर्म और पछतावा महसूस करते थे। एक सहस्राब्दी में पहली बार देश का एक नेता खुले तौर पर इस प्रतीकात्मकता को पूरी दुनिया में ले जा रहा है। उनका केदारनाथ की गुफा में ध्यान करने जाना, विवेकानन्द मंदिर में दो दिन ध्यान करने में बिताना, यह विश्वभर के हिंदुओं को एक मजबूत हिन्दू पहचान की पुष्टि का संदेश देता है। वे विदेशी गणमान्य व्यक्तियों को अहमदाबाद, वाराणसी, जयपुर ले जाते हैं, न कि आगरा और दिल्ली। इस घटना का महत्व इतना गहरा है कि 500 साल बाद सनातन इतिहास का अध्ययन करने वाले लोग हमारे वर्तमान दशक को हजारों वर्षों की सतत सनातनी सभ्यता के एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में लिखेंगे। यह एक घटना, जिसने इस शाश्वत सभ्यता को एक गहरी लंबी नींद से झकझोर कर जागृत कर दिया।

(यह लेखक के निजी विचार हैं।)

मैं पर्यावरण

हाँ! मैं हूँ पर्यावरण!
धारण किये था चारों ओर
रंग-बिरंगा उजला आवरण,
हाँ! धारण किये था अपने चारों ओर रंग-बिरंगा उजला आवरण।

करता हूँ मैं नित्य ही
निस्वार्थ भाव से तुम सबका भरण,
तो क्यों करते हो आखिर
तुम पांच जून को ही मेरा स्मरण।

मैंने भरी थी इस दुनिया में प्राकृतिक मिठास,
बदले में न रखी मैंने तुम सबसे कोई आस।
पर इक बात न आए मुझे रास
पर इक बात न आए मुझे रास,
क्यों मिटती नहीं तुम सबकी प्रकृति से खिलवाड़ की ये प्यास।

मैंने पोषण किया था उनलोगों का,
जिन्हें खुद से भी प्रिय थे मेरे नदी-नाले व वन,
पर अचंभित नहीं हूँ मैं देखकर!
तुम्हे प्रिय लगने लगा वन तस्करी से प्राप्त होने वाला धन।
जरा देखो! कच्चे मकानों के स्थान पर महल गए हैं बन,
पर खोज पाओगे क्या इस चकाचौंध में तुम अपना जीवन?

मेरी चेतावनी नहीं सलाह सुन ले हे मानव मन!
गर अभी भी ना करोगे तुम मेरा संरक्षण,
जी ना पाओगे तुम इस धरती पर एक भी क्षण।
उठो! जागो! लो मन में ये प्रण!
पर्यावरण संरक्षण! पर्यावरण संरक्षण!

- अचला
करसोग, हि.प्र.।

हरीतिमा-रक्षा को एकजुट हुई आवाज

एक दिन पर्यावरण के नाम... 'हमारी भूमि, हमारा भविष्य' के नारे के साथ संकल्पित हुए बोकारोवासी

संवाददाता

बोकारो : हर वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इस साल विश्व पर्यावरण दिवस अभियान हमारी भूमि - हमारा भविष्य नारे के तहत भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखे के प्रति लचीलापन पर केंद्रित है। इसी थीम के साथ धरती माता की रक्षा के लिए चास-बोकारो में विभिन्न संगठनों के लोगों ने पर्यावरण दिवस मनाया। शहरवासी विभिन्न संगठनों के बैनर तले जगह-जगह एकत्रित हुए। स्कूल, कॉलेज एवं विभिन्न सरकारी व गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा पौधारोपण अभियान चलाया गया। बोकारो स्टील प्लांट द्वारा संयंत्र, नगर एवं अस्पताल स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। अधिकारियों ने पौधे लगाकर प्रकृति की रक्षा का संदेश दिया। निदेशक -प्रभारी बीरेंद्र कुमार तिवारी ने शहर के सिटी पार्क में पौधारोपण किया। मौके पर अधिशासी निदेशक सीआर मोहापात्रा, सुरेश रंगानी व राजन प्रसाद, मुख्य महाप्रबंधक, महाप्रबंधक (पर्यावरण नियंत्रण) नवीन प्रकाश श्रीवास्तव सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे। विश्व पर्यावरण दिवस पर इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स, बोकारो लोकल चैप्टर के परिसर में बोकारो स्टील प्लांट के पर्यावरण संरक्षण और सस्टेनेबिलिटी विभाग द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया तथा आक्सीजन प्लांट में भी पौधारोपण किया गया। लोगों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं।

ईएसएल :1.5 लाख पौधे लगाने की शपथ

विश्व पर्यावरण दिवस समारोह के साथ एक सप्ताह तक चलने वाला पर्यावरण

चेतना कार्यक्रम जागरूकता और कार्रवाई सप्ताह ईएसएल स्टील लिमिटेड में मनाया गया। एचएसईएस विभाग द्वारा आयोजित सप्ताह भर के समारोह ने संगठन के लगभग सभी कर्मचारियों को प्रभावित किया और इसमें एक्सेल 30 क्लासेस में जागरूकता सत्र और सुरक्षा वाहन, विभागीय क्विज, मजेदार सत्र, पोस्टर बनाने की प्रतियोगिताएं, ऑनलाइन क्विज, फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी प्रतियोगिताओं के अलावा 1.5 लाख पौधे लगाने के महत्वाकांक्षी वृक्षारोपण अभियान शामिल रहा। वेदांता ईएसएल स्टील लिमिटेड के मुख्य वित्तीय अधिकारी आनंद दुबे, सीक्यूओ और प्रमुख बिजनेस एक्सीलेंस मीनाक्षी सभरवाल, सीएचआरओ श्यामली मिंज ने दीप प्रज्वलन के बाद पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने और ईएसएल स्टील लिमिटेड के महत्वाकांक्षी 1.5 लाख पौधे लगाने के अभियान में मदद करने की शपथ ली। इसमें ईएसएल स्टील कंपनी के के. संदीप, प्रमुख - एचएसईएस, ईएसएल; तपेश चंद्र नस्कर, निदेशक, डीआईपी; अमृत मुखर्जी, निदेशक, सेंट्रल इंजीनियरिंग; सरोज कुमार सिंह, निदेशक, स्टील; और अमल घोष, निदेशक, परियोजनाएं ने भी भाग लिया, जो विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित करने उपस्थित हुए।

सीटीपीएस : पर्यावरण-प्रबंधन के लिए पौधे लगाना हमारा दायित्व : ठाकुर

दामोदर घाटी निगम (डीवीसी) चंद्रपुरा ताप विद्युत केंद्र कॉलोनी में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ महाप्रबंधक एवं परियोजना प्रधान मनोज कुमार ठाकुर, वरिष्ठ महाप्रबंधक रामप्रवेश साह सहित डीवीसी के कई वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों ने पौधारोपण किया। डीवीसी के पर्यावरण प्रबंधन और प्रदूषण नियंत्रण विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में सैकड़ों फलदार पेड़ लगाए गए। इस अवसर पर आयोजित समारोह के संबोधन में वरिष्ठ महाप्रबंधक और परियोजना प्रधान श्री मनोज कुमार ठाकुर ने कहा कि पर्यावरण प्रबंधन के लिए पौधा लगाना हम सभी का दायित्व है। मौके पर वरिष्ठ महाप्रबंधक रामप्रवेश साह, उपमहाप्रबंधक संजीव कुमार, राजीव रंजन ओझा, केएम प्रियदर्शी, राजीव कुमार, महावीर ठाकुर, तरुणेश्वर प्रसाद, दिलीप कुमार, आरपी सिंह, विनय कृष्ण दास, सत्येंद्र कुमार, कंचन स्मिता टोप्पो, श्वेता रानी, हरि मुकुंद प्रजापति, संजीव कुमार, राजीव कुमार तिवारी, बद्रीनारायण राठिया, अक्षय कुमार, विजय कुमार सिंह, विजय कुमार पांडेय, बलदेव सिंह, सुनील कुमार, तालेश्वर टु, अशोक झा आदि शामिल थे।

बीटीपीएस : प्रकृति से छेड़छाड़ बंद हो : एचओपी

बोकारो थर्मल : विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर बोकारो थर्मल स्थित पावर प्लांट में डीवीसी के एचओपी आनंद मोहन प्रसाद, जीएम ओएंडएम एस भट्टाचार्य, केबी कॉलेज बेरमो जंतु विज्ञान के प्रोफेसर डॉ अरुण कुमार राय, डीजीएम बीजी होलकर सहित अन्य इंजीनियरों एवं अधिकारियों के द्वारा पौधारोपण किया गया। मौके पर एचओपी ने कहा कि आज विश्व लेवल पर तापमान में हो रही भारी वृद्धि के चलते ग्लोबल वार्मिंग की समस्या उत्पन्न हो रही है। शहरों में शुद्ध वायु का अभाव होता जा रहा है। जल स्तर नीचे जा रहा है। अगर इसे नियंत्रित करना है,तो अधिक से अधिक पौधारोपण करना होगा। साथ ही प्रकृति के पेड़, पौधे, जंगल, पहाड़ से छेड़छाड़ बंद करना होगा। मौके पर डीवीसी के सभी इंजीनियर, अधिकारी एवं कर्मी मौजूद थे। धन्यवाद ज्ञापन डीजीएम मैकेनिकल सोमेन मंडल ने किया।

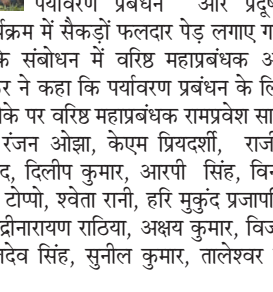

डीपीएस बोकारो : प्रकृति के कोप से बचना है तो लगाएं अधिकाधिक पौधे : डॉ. गंगवार

'पेड़-पौधे आपदा-रक्षक ही नहीं, बल्कि पृथ्वी का वास्तविक आभूषण भी हैं। ये जलवायु परिवर्तन के खिलाफ प्रथम पंक्ति के योद्धा हैं। आज जिस प्रकार तापमान में अप्रत्याशित बढ़ोतरी, भीषण आंधी-तूफान, वज्रपात से लेकर कई तरह की प्राकृतिक समस्याएं हम झेल रहे हैं, उनसे बचाव के लिए एकमात्र उपाय अधिकाधिक पौधारोपण ही है।' उक्त बातें डीपीएस बोकारो के प्राचार्य डॉ. ए एस गंगवार ने विद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित सघन पौधारोपण अभियान के दौरान कहीं।

केबी कॉलेज बेरमो : पारिस्थितिकी संतुलन के लिए पौधारोपण जरूरी : डॉ. प्रभाकर

कथारा स्थित केबी कॉलेज बेरमो में पौधारोपण अभियान चलाया गया। कॉलेज परिसर में दर्जनों फलदार, औषधीय एवं छायादार पौधे चंदन, शीशम, करच, आवंला, केला, जामुन के पौधे लगाए गए। प्राचार्य लक्ष्मी नारायण सहित आईक्यूएसी कोऑर्डिनेटर डा अरुण कुमार रॉय महतो, एनएसएस कार्यक्रम पदाधिकारी डा प्रभाकर कुमार, सीसीएल कथारा के सीएसआर पदाधिकारी चंदन कुमार, प्रो पीपी कुशवाहा, प्रो संजय कुमार दास, सदन राम तथा एनएसएस के स्वयंसेवकों द्वारा पौधारोपण किया गया। हमारी भूमि हमारा भविष्य विषय पर जागरुकता सह सेमिनार भी हुआ। प्राचार्य लक्ष्मी नारायण ने कहा कि सभी प्राणी पृथ्वी के संसाधनों पर निर्भर हैं अतः पृथ्वी की रक्षा प्रथम कर्तव्य व जिम्मेदारी है। एनएसएस कार्यक्रम पदाधिकारी डा प्रभाकर कुमार ने कहा कि पारिस्थितिकी संतुलन के लिए पौधारोपण अनिवार्य कदम है। पर्यावरण दिवस को लेकर पोस्टर प्रतियोगिता भी हुई।

आह्वान पीसीपी एंड डीटी एक्ट को लेकर बोकारो में जिलास्तरीय कार्यशाला आयोजित, सोनोग्राफी सेंटर वालों को दी गईं हिदायतें

गिरते लिंगानुपात को नियंत्रित करना सामूहिक जिम्मेदारी : डीसी

संवाददाता

बोकारो : चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग झारखंड सरकार के तत्वावधान में गर्भधारण पूर्व और प्रसव पूर्व निदान तकनीक (पीसीपीएनडीटी) अधिनियम, 1994 पर एकदिवसीय जिलास्तरीय कार्यशाला आयोजित की गई। कैंप -2 स्थित न्याय सदन के सभागार में आयोजित इस कार्यशाला की अध्यक्षता उपायुक्त विजया जाधव ने की। मौके पर उप विकास आयुक्त संदीप कुमार, अपर समाहर्ता मो. मुमताज अंसारी, अनुमंडल पदाधिकारी चास ओम प्रकाश गुप्ता, अनुमंडल पदाधिकारी बेरमो अशोक कुमार, जिला परिवहन पदाधिकारी वंदना शेजवलकर, पीसीपीएनडीटी एवं जिला नोडल अधिकारी सहित पीसीपीएनडीटी अधिनियम अंतर्गत पंजीकृत केन्द्रों के संचालक, चिकित्सकों एवं टेक्नीशियन उपस्थित थे। अपने संबोधन में डीसी श्रीमती जाधव ने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या और

गिरते लिंगानुपात को रोकने के उद्देश्य से एक्ट को सख्ती से लागू किया जाना जरूरी है। इसके प्रति हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी बनती है। उन्होंने गर्भधारण पूर्व एवं प्रसव पूर्व निदान तकनीक अधिनियम एक्ट 1994 के प्रावधानों को जिले में सख्ती से लागू करने से संबंधित आयोजित एक दिवसीय उन्मुखीकरण सह कार्यशाला में अपनी बातें रखी। कार्यशाला में स्टेट को-ऑर्डिनेटर पीसीपीएनडीटी, रांची से आये रफत फरजाना ने बताया कि समुचित प्राधिकारियों व अधिनियम अंतर्गत पंजीकृत केन्द्रों को गर्भधारण पूर्व एवं प्रसव पूर्व निदान तकनीक अधिनियम 1994 और इसके क्रियान्वयन की विस्तृत जानकारी दी।

राज्य नोडल पदाधिकारी एक्ट का वाट्सएप नंबर 9835133980 एवं जिला नोडल पदाधिकारी के वाट्सएप नंबर 7004146007 के बारे में बताया। साथ ही, जिले में संचालित सोनोग्राफी केन्द्र के संचालक, चिकित्सकों को उक्त अधिनियम के अक्षरशः अनुपालन का सख्त निर्देश दिया।

मुखबिर को मिलेगा एक लाख का इनाम

डीसी ने बताया कि भ्रूण लिंग परीक्षण पर पूरी तरह से अंकुश लगाने को राज्य सरकार तैयारी कर ली है। लगातार मिली रहीं शिकायतों के बाद अब नई पहल शुरू की जा रही है। मुखबिर योजना के तहत लिंग परीक्षण करने वाले सेंटर की जानकारी देने वालों को एक लाख रुपये का इनाम दिया जाएगा। उन्होंने पीसी एंड पीएनडीटी एक्ट को और प्रभावशाली बनाने के लिए सरकार ने मुखबिर योजना के बारे में बताया। इसके तहत लिंग परीक्षण करने वाले संस्थानों को चिन्हित करते हुए उनके विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी।

बीएसएल को प्रतिष्ठित कलिंगा पर्यावरण उत्कृष्टता पुरस्कार मिला

संवाददाता
बोकारो : वित्तीय वर्ष 2024 - 25 की शुरुआत में बोकारो स्टील प्लांट ने पर्यावरण उत्कृष्टता श्रेणी में प्रतिष्ठित कलिंगा पर्यावरण उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त कर अपने नाम एक और उपलब्धि जोड़ ली है। बीते 15 मई, 2024 को सार्वजनिक उद्यम, हैदराबाद और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, ओडिशा के ईसीएस (पर्यावरण संरक्षण एवं स्थिरता) विभाग के जूरी सदस्यों के सामने नितेश रंजन, सहायक महा प्रबंधक (पर्यावरण) द्वारा प्रस्तुति दी गई और जूरी के सदस्यों द्वारा उठाए गए सभी प्रश्नों का सटीक समाधान महाप्रबंधक (पर्यावरण), एनपी श्रीवास्तव के द्वारा किया गया।

जूरी पर्यावरण संरक्षण के लिए बोकारो स्टील प्लांट की गतिशील पहल और स्टील निर्माण के सस्टेनेबल तरीकों को अपनाने के प्रयासों से काफी प्रभावित हुई। जूरी सदस्यों ने सेल, बोकारो स्टील प्लांट को विजेता के रूप में अनुशंसित किया है। पुरस्कार समारोह 08 जून 2024 को भुवनेश्वर में, इंस्टीट्यूट ऑफ क्वालिटी द्वारा आयोजित किया गया।

पीएम उत्सर्जन में 12 फीसदी तक की कमी

बोकारो स्टील प्लांट के संचार प्रमुख मणिकांत धान के अनुसार, यह पुरस्कार पर्यावरण के प्रति संगठन की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उल्लेखनीय है कि बीएसएल के निदेशक प्रभारी बीरेंद्र कुमार तिवारी के नेतृत्व में बीएसएल ने सर्कुलर इकोनॉमी, ऊर्जा दक्षता और पर्यावरण संरक्षण का उपयोग कर विभिन्न क्षेत्रों में परिचालन उत्कृष्टता और सस्टेनेबिलिटी को शामिल करने का अभियान चलाया है। यहां यह उल्लेख करना उचित है कि बीएसएल ने पिछले तीन वित्तीय वर्षों के दौरान पार्टिकुलेट मैटर उत्सर्जन में 12.07 प्रतिशत की कमी तथा स्पेसिफिक एफ़्फ़्लुएंट डिस्चार्ज में 77.3 फीसद की कमी हासिल की है।

100 प्रतिशत ठोस अपशिष्ट का इस्तेमाल

वित्त वर्ष 2022-23 और 2023-24 के दौरान बीएसएल में 100 प्रतिशत ठोस अपशिष्ट उपयोग हासिल किया गया। पर्यावरण संरक्षण हेतु बीएसएल ने शुरुआत से अभी तक 47 लाख से अधिक पौधे लगाए गए हैं। सीओपी26 में भारत द्वारा प्रतिबद्ध 2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए फ्लोटिंग सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना हेतु कूलिंग पोंड की पहचान की गई है और जीएचजी उत्सर्जन में कमी द्वारा नेट- न्यूट्रैलिटी प्राप्त करने के लिए विभिन्न संचालन उत्कृष्टता और ऊर्जा दक्षता की पहल कर रहा है।

अभियंत्रण शिक्षा में अनुसंधान व बेहतर गुणवत्ता को ले एओयू

संवाददाता
बोकारो : गोबिंद सिंह एजुकेशनल सोसायटी टेक्निकल कंपस (जीजीईएसटीसी), बोकारो के निदेशक डॉ. प्रियदर्शी जरुहार तथा आई.सी.ए.आर. - भारतीय कृषि जैव प्रौद्योगिकी संस्थान (भारत सरकार), गढ़खतंगा, रांची के निदेशक डॉ. सुजय रक्षित के बीच मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग हस्ताक्षरित हुआ। इसके तहत अनुसंधान व शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए विभिन्न कदम उठाए जाएंगे। डॉ. सुजय रक्षित ने बताया कि कुछ कोर्सेज में इलेक्ट्रॉनिक और इंस्ट्रूमेशन जैसे तकनीकी विषय हैं, जिन्हें बेहतरीन रूप से पढ़ाने के वास्ते उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह एजुकेशनल सोसायटी टेक्निकल कंपस, जो तकनीकी व अभियांत्रिकी का उच्च शिक्षण संस्थान है, के साथ एमओयू किया गया। डॉ. प्रियदर्शी जरुहार ने कहा कि इस एमओयू के तहत दोनों संस्थाओं को कृषि और अभियांत्रिकी क्षेत्र में यथासंभव शैक्षणिक सहायता प्रदान होगी। ज्ञात हो कि जी.जी.एस.ई.एस.टी.सी. बोकारो झारखंड का उत्कृष्ट तकनीकी शिक्षण संस्थान है, जहां कंप्यूटर इंजीनियरिंग- कोर; डेटा साइंस; साइबर सिक्योरिटी; मैकेनिकल इंजीनियरिंग; सिविल इंजीनियरिंग; इलेक्ट्रॉनिक एंड इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग; फैशन टेक्नोलॉजी; एम.बी.ए.; बी.बी.ए.; बी.सी.ए.; तथा डिप्लोमा की पढ़ाई होती है। कॉलेज की तरफ से प्रो. गौतम कुमार, डॉ. मनोजीत डे, प्रो. महमूद आलम, प्रो. दयाशंकर दिवाकर, डॉ. दीपक कुमार ने विशेष योगदान दिया। संस्थान के अध्यक्ष तरसेम सिंह व सचिव सुरेंद्र पाल सिंह ने इस महत्वाकांक्षी एम.ओ.यू. के वास्ते कॉलेज को बधाई दी।

परोपकार हर साल भक्तों की मुराद पूरी करता अग्रवाल परिवार, 40 श्रद्धालु हुए रवाना

15 वर्षो से निर्धन श्रद्धालुओं को निजी खर्च से करा रहे हैं मां वैष्णो देवी के दर्शन

संवाददाता
बेरमो : समाजसेवा के कई पहलू हैं। लेकिन, पैसे के अभाव में निर्धन श्रद्धालुओं की इच्छा पूरी करने की सेवा अपने-आप में सबसे जुदा है। ऐसा ही अनूठा प्रयास कर रहा है बेरमो का अग्रवाल परिवार, जो विगत 15 वर्षों से अपने निजी खर्च से गरीब श्रद्धालुओं को माता वैष्णो देवी के दर्शन करा रहा है। इस बार भी 40 भक्तों का जत्था रवाना हुआ, जिन्हें जरीडीह बाजार अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा के अध्यक्ष सह झामुमो नेता अनिल अग्रवाल ने गोमो स्टेशन से जम्मू के लिए विदा किया।

श्री अग्रवाल कहा कि अपने परिजनों के सहयोग से निजी मत से प्रतिवर्ष माता वैष्णो देवी की यात्रा दर्शन के लिए वैष्णो देवी के लिए वे भेजते हैं। इनमें खासकर वैसे लोगों को चिन्हित करते हैं, जो आर्थिक रूप से कमजोर हो या अपने से माता वैष्णो देवी का दर्शन करने में सक्षम नहीं है। ऐसे लोगों को चिन्हित कर दर्शन कराने के लिए भेजा जाता है, जिसका नेतृत्व उनके बड़े भाई सौरभ अग्रवाल करते हैं। इस जत्थे में लगभग 40 महिला-पुरुष श्रद्धालु शामिल हैं, जो आसपास के विभिन्न क्षेत्रों से हैं। यह सिलसिला पिछले 15 वर्षों से चलते आ रहा है और माता रानी का आशीर्वाद रहा तो आगे भी जारी रहेगा।

गोमो में रवानगी के दौरान उपस्थित श्रद्धालुओं के जयघोष से पूरा माहौल भक्तिमय हो गया। श्री अग्रवाल ने भक्तों से माता रानी के समक्ष अरदास करने के दौरान क्षेत्र में अमन चैन और एकता भाईचारा और खुशहाली के लिए प्रार्थना करने को कहा। मौके पर निरंजन कुमार, भोला साह, अनिल कुमार, मुकुंद जायसवाल, दिनेश कच्छप, राकेश कुमार, गिरधारी प्रसाद, सोनू अगरिया, संगीता कुमारी, रीता देवी, बिनेश साव, पारो देवी, बितली देवी सहित कई अन्य श्रद्धालु उपस्थित रहे।

हफ्ते की हलचल

सुहागिनों ने श्रद्धापूर्वक की वट-सावित्री पूजा

बोकारो : अपने पति की लंबी आयु की कामना को लेकर सुहागिनों ने भक्ति-भाव के साथ श्रद्धापूर्वक वट सावित्री पूजा संपन्न की। चास-बोकारो के विभिन्न मंदिरों के समीप तथा अन्य जगहों पर स्थित वटवृक्ष में व्रतियों ने पूरी निष्ठा से वट सावित्री पूजा की। अहले सुबह से ही महिलाएं सोलहों श्रृंगार से युक्त हो पूरी तरह सज-धजकर अपने-अपने घरों के नजदीकी वटवृक्षों के समीप पहुंचीं। विधिपूर्वक उन्होंने धूप-अगरबत्ती, नैवेद्य, पुष्प, अक्षत, फल, जल आदि समर्पित कर वृक्ष को बांस निर्मित पंखे झेले तथा पेड़ की परिक्रमा करते हुए उसके तने में मौली लपेटकर व बांधकर अपने अटूट व अमर सुहाग की कामना की। पूजा के बाद दिनभर व्रतियों ने अपने केश में वट के पत्ते लगाये। पूजा के बाद उन्होंने अपना उपवास तोड़ा। नगर के सेक्टर-3 स्थित टू-टैंक गार्डन, थाना मोड़ शिव मंदिर, चेकपोस्ट, चास सहित विभिन्न जगहों पर इस पर्व का उत्साह छाया रहा। जिले के बोकारो थर्मल, गोमिया, पेटरवार आदि इलाकों में वट-सावित्री पूजा की धूम रही।

धर्म-प्रचार यात्रा में जैन साध्वियों का दल पहुंचा

बोकारो : विश्वशांति दूत आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या समणी निर्देशिका मधुर प्रज्ञा जी, समणी शुभ प्रज्ञा जी एवं समणी मनन प्रज्ञा जी के सानिध्य में नगर के सेक्टर-4 स्थित प्रकाश श्री भवन में प्रवचन सत्र का आरंभ हुआ। तीनों समणीवृंद विभिन्न स्थानों का भ्रमण करते हुए पुनः बोकारो पधारी हैं। अपनी धर्म-प्रचार यात्रा के तहत अगले लगभग एक पखवाड़े तक वे यहीं विराजमान रहेंगी। प्रवचन सत्र में बड़ी संख्या में जैन श्वेतांबर तेरापंथ समाज के लोग शामिल हो रहे हैं। समणी मधुर प्रज्ञा लोगों को सफल मानव जीवन का मर्म समझा रही हैं और जैन धर्म के नियमों के अनुपालन का संदेश दे रही है। उन्होंने कहा कि भावनाएं ही पुण्य-पाप, राग-वैराग्य, संसार व मोक्ष आदि का कारण है। अतः जीव को सदा कुत्सित भावनाओं का त्याग करके उत्तम भावनाएं रखनीं चाहिए। उक्त आशय की जानकारी जैन समाज की ओर से मीडिया प्रभारी सुरेश बोथरा ने दी।

नीट में चिन्मय के शुभम को मिले सर्वाधिक 710 अंक

बोकारो : मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट (यूजी) 2024 में चिन्मय विद्यालय बोकारो के छात्र-छात्राओं ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए बाजी मार ली है। विद्यालय के छात्र शुभम कुमार ने 720 में सर्वाधिक 710 अंक लाकर जिले में टॉपर होने का गौरव पाया। विद्यालय के 18 से अधिक छात्र-छात्राओं ने 600 से अधिक अंक प्राप्त किए। सफल विद्यार्थियों में शुभम आनंद, वादिनी कुमारी, प्रांजल, आयुष, मौरूषी घोष, प्रेमजीत सिंह, शोभिक पॉल, निशांत कुमार, आयुष राय, हर्षराज सहित 30 से अधिक विद्यार्थियों के नाम शामिल हैं। चिन्मय मिशन, बोकारो की आचार्या स्वामिनी संयुक्तानंद सरस्वती, विद्यालय के अध्यक्ष विश्वरूप मुखोपाध्याय, सचिव महेश त्रिपाठी, कोषाध्यक्ष आरएन मल्लिक, प्राचार्य सूरज शर्मा व उपप्राचार्य नरमेंद्र कुमार ने सभी सफल छात्र- छत्राओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

नीट में डीपीएस बोकारो का रहा शानदार प्रदर्शन

बोकारो : मेडिकल शिक्षण संस्थानों में दाखिले को लेकर बीते 5 मई को एनटीए (राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी) द्वारा आयोजित नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट यानी नीट (यूजी) 2024 में डीपीएस बोकारो के विद्यार्थियों ने इस बार भी उम्दा प्रदर्शन किया। विद्यालय के लगभग तीन दर्जन विद्यार्थियों ने शानदार कामयाबी पाई है। इनमें विद्यालय के छात्र सत्यम कुमार ने सर्वाधिक 695 अंक प्राप्त कर स्कूल में टॉपर होने का गौरव पाया है। सफल रहे विद्यार्थियों में अनिकेत कुमार, सक्षम श्रीत गुप्ता, राहुल कुमार सिंह, सान्या कुमारी, श्रेया गुप्ता, रुचि प्रिया, आयुष कुमार, शशांक मेदिरेड्डी, साहिल शेखर, रोबाब फैजी, मनीषा कुमारी, तमन्ना रे, मुन्ना राज व अनुराग आशीष आदि शामिल रहे। प्राचार्य डॉ ए एस गंगवार ने सभी सफल विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

जोगीडीह कोलियरी से संसद भवन तक

नए सियासी पायदान पर ढुल्लू... समरेश ने दी थी 'टाइगर' की उपाधि, विरोधों के बावजूद ताकतवर बन उभरे

विशेष संवाददाता

धनबाद/बोकारो : नाम ढुल्लू महतो। उपनाम 'टाइगर'। जैसे ही उन्हें भाजपा ने इस बार लोकसभा चुनाव के लिए टिकट दिया, विरोधियों को एक नया बहाना मिल गया। चारों तरफ से उनके दबंग और बाहुबली होने के आरोप सामने आने लगे। यहां तक कि भाजपा के भीतर से भी विरोधी स्वर गूंजने लगे थे। इन सबके बावजूद ढुल्लू ने शानदार जीत दर्ज की और सियासत का टाइगर बन उभरे। उन्होंने अपनी निकटतम प्रतिद्वंदी इंडी गंठबंधन की कांग्रेस प्रत्याशी अनुपमा सिंह को 3 लाख 23 हजार 872 मतों से परास्त किया। भाजपा के ढुल्लू महतो को 7 लाख 77 हजार 227 वोट मिला जबकि कांग्रेस की अनुपमा सिंह को 4 लाख 53 हजार 355 वोट मिले। हालांकि, पूर्व मंत्री स्व. राजेन्द्र सिंह की पुत्रवधू अनुपमा सिंह के पति और बेरमो से विधायक अनूप सिंह ने सारी ताकत लगायी, लेकिन वे अपनी पत्नी अनुपमा सिंह को नहीं जिता पाए। ढुल्लू महतो को पीएन सिंह का टिकट काटकर भाजपा ने प्रत्याशी बनाया था, जो अभी बाघमारा से विधायक भी थे।

अब बात ढुल्लू महतो के व्यक्तिगत जीवन की करें, तो जोगीडीह कोलियरी से संसद भवन तक का सफर उनके लिए काफी चुनौतियों भरा रहा। ढुल्लू महतो की प्रारंभिक शिक्षा उत्क्रमित मध्य विद्यालय तुंडू से हुई। कतरास डीएवी इंटर कोलज से इंटर की पढ़ाई पूरी की। आर्थिक कठिनाई के कारण उन्हें अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। पढ़ाई छोड़ने के बाद वह सेल जोगीडीह कोलियरी में काम करने लगे उन दिनों मजदूरों को काफी प्रताड़ित किया जा रहा था मजदूरों की प्रताड़ना उनसे बर्दाश्त नहीं हुई जिसके बाद ढुल्लू महतो मजदूरों के हक और अधिकार की लड़ाई लड़ने लगे देखते ही देखते मजदूरों के दिलों में वह राज करने लगे मजदूरों की लड़ाई में उन्हें इज्जत और शोहरत मिलनी शुरू हो गई। वह लगातार आम लोगों से मिलकर उनकी समस्याओं को दूर करने लगे।

1999 में समरेश से मिलना रहा जीवन का नया मोड़

जानकारों के मुताबिक वर्ष 1999 में वरिष्ठ नेता समरेश सिंह ढुल्लू महतो की मुलाकात हुई और यही श्री महतो के जीवन में एक नया मोड़ रहा। समरेश ढुल्लू महतो के कार्यों से बेहद प्रभावित थे। समरेश सिंह ने ही साल 2000 में ढुल्लू महतो को टाइगर की उपाधि दी थी। इसके बाद उन्होंने टाइगर फोर्स नामक संस्था का गठन किया। इस संगठन की गूंज कोयलांचल ही नहीं, पूरे राज्य में गूंजने लगी। साल 2004 में ढुल्लू महतो ने गरीब, मजदूर के लिए आवाज उठाते हुए राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया था और दो दशक बाद वह नए पायदान पर पहुंच सके हैं। विदित हो कि समरेश सिंह के पार्टी बनांचल कांग्रेस के बैनर तले ढुल्लू महतो साल 2004 में बाघमारा विधानसभा से चुनाव लड़ा। हालांकि, वे हार गए और जलेश्वर महतो जीते। 2004 से लेकर साल 2009 तक पांच साल में ढुल्लू महतो ने टाइगर फोर्स संगठन को बेहद मजबूत बनाते हुए इसका विस्तार किया। 2009 में ढुल्लू महतो अपने महत्वकांक्षा को सबल देने के साल 2009 में उन दिनों झारखंड विकास मोर्चा के सुप्रीमो बाबूलाल मरांडी के खेमे में चले गए। बाबूलाल मरांडी ने झाविमो के टिकट पर ढुल्लू महतो को बाघमारा विधानसभा का टिकट दिया। और 56,026 मतों से उन्होंने जीत हासिल की। इस तरह वह बाघमारा विधानसभा से पहली बार जीत हासिल कर ढुल्लू विधायक बने।

2014 में भाजपा से जुड़े

वर्ष 2014 में ढुल्लू महतो ने पाला बदला और भाजपा में शामिल हो गए। बीजेपी ने उन पर अपना विश्वास जताया और बाघमारा विधानसभा से टिकट देकर अपना उम्मीदवार बनाया। ढुल्लू महतो भी भाजपा की उम्मीदों पर खरे उतरे। इस बार पिछले रिकॉर्ड को तोड़ते हुए 86,603 मत विधानसभा चुनाव में हासिल कर बाघमारा में कमल खिलाने का काम किया। फिर से निकटतम प्रतिद्वंदी जलेश्वर महतो को हार का सामना करना पड़ा। वर्ष 2019 में फिर से भारतीय जनता पार्टी ने ढुल्लू महतो को बाघमारा विधानसभा से टिकट दिया। इस बार भी उन्होंने जीत हासिल की। अबकी बार उन्हें एक नया अवसर मिला और विधानसभा से सीधे लोकसभा तक उन्होंने छलांग लगा दी।

राजनीति विरासत में नहीं

ढुल्लू के करीबी बताते हैं कि राजनीति उन्हें विरासत में नही मिली है, बल्कि मजदूरों के अधिकार की लड़ाई की बदौलत आज वह इस मुकाम पर खड़े हैं। ढुल्लू महतो का जन्म 12 मई 1975 में हुआ था। बाघमारा का चिटाही उनका पैतृक गांव है। उनके पिता का नाम पूना महतो, जबकि माता का नाम रुकवा महताइन है। ढुल्लू महतो 12 वीं पास हैं। उनके पिता महेशपुर कोलियरी में मजदूर के रूप में कार्यरत थे। उनकी शादी बोकारो जिले की रहने वाली सावित्री देवी से हुई। छह भाइयों में ढुल्लू महतो सबसे छोटे हैं।

इधर, गिरिडीह में त्रिकोणीय संघर्ष में चमके चंद्रप्रकाश, 80,880 मतों के अंतर से जीते

कड़े त्रिकोणीय मुकाबले के बीच कुल 80,880 मतों के अंतर से भाजपा समर्थित (एनडीए) आजसू पार्टी के उम्मीदवार चंद्र प्रकाश चौधरी लगातार दूसरी बार गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र के सांसद निर्वाचित घोषित किये गए। उन्हें कुल 4,51,139 मत प्राप्त हुए। बोकारो की उपायुक्त सह- गिरिडीह लोकसभा की निवार्ची पदाधिकारी विजया जाधव ने उन्हें जीत का प्रमाण-पत्र सौंपा। इस अवसर पर आजसू पार्टी के प्रमुख सुदेश महतो, गोमिया विधायक डॉ लम्बोदर महतो भी मौजूद थे। उधर, निर्दलीय प्रत्याशी जयराम महतो के साथ कड़ा संघर्ष करते हुए इंडी गठबंधन समर्थित झामुमो उम्मीदवार मथुरा प्रसाद महतो 3,70,259 मत लाकर दूसरे स्थान पर रहे। जबकि, तीसरे स्थान पर रहने वाले निर्दलीय प्रत्याशी जयराम महतो को 3,47,322 मत हासिल हुए। उल्लेखनीय है कि गिरिडीह लोकसभा के चुनाव में इस बार कुल 16 प्रत्याशी मैदान में थे। इनमें आजसू पार्टी के चंद्र प्रकाश चौधरी को 451139, झामुमो के मथुरा प्रसाद महतो को 370259, निर्दलीय जयराम कुमार महतो को 347322, कमल प्रसाद को 14074, सुबोध कुमार यादव को 13106, रामेश्वर दुसाध को 11020, सुनीता टुडू को 10944, ऐनुल अंसारी को 6939, द्वारका प्रसाद लाला को 5627, कलावती देवी को 5430, ज्ञानेश्वर प्रसाद को 5356, शिवजी प्रसाद को 4256, प्रमोद राम को 3825, उषा सिंह को 3761, पप्पू निषाद को 3216 तथा सुभाष कुमार ठाकुर को 2517 मत प्राप्त हुए। जबकि, 171 मत रद्द कर दिए गए। कुल 6044 मतदाताओं ने नोटा (नन ऑफ द अबव) यानी उपर्युक्त में से कोई भी नहीं, पर अपने वोट डाले। यूं कहें तो 6044 मतदाताओं को कुल 16 प्रत्याशियों में से एक भी रास नहीं आए। खास बात यह रही कि 16 में से आधे यानी कुल आठ प्रत्याशियों को नोटा से भी कम वोट मिले। बोकारो जिला निर्वाची पदाधिकारी सह उपायुक्त विजया जाधव ने उन्हें प्रमाण पत्र सुपुर्द किया। मौके पर आजसू सुप्रीमो सुदेश महतो, गोमिया विधायक डॉ. लंबोदर महतो सहित कई आजसू कार्यकर्ता मौजूद रहे।

डॉ. अविचल बने अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद के केंद्रीय अध्यक्ष

विशेष संवाददाता

जमशेदपुर : मैथिली और हिंदी के जाने-माने साहित्यकार एवं एल बीएसएम कॉलेज जमशेदपुर के प्राचार्य डॉ. अशोक अविचल को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मैथिली भाषा मिथिला राज आदि के लिए काम करने वाली सशक्त संस्था अंतर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद का केंद्रीय अध्यक्ष बनाया गया है। वह इससे पहले 2003 से 2006 तक परिषद के केंद्रीय सचिव एवं 26 से 2009 तक केंद्रीय संगठन मंत्री रह चुके हैं। वर्तमान में परिषद के केंद्रीय साहित्य मंच के अध्यक्ष का दायित्व संभाल रहे थे। साहित्य अकादमी संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार में भी वह 5 वर्ष मैथिली सलाहकार समिति के सदस्य एवं 5 वर्ष सामान्य एवं कार्यकारी परिषद के सदस्य सहित साहित्य अकादमी में मैथिली एडवाइजरी बोर्ड के कोऑर्डिनेटर भी रह चुके हैं। इनके द्वारा लिखित, अनुवादित एवं संपादित दो दर्जन से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है।

पहले मैच में ही देवेशचंद्र ठाकुर ने मारा जीत का छक्का, कहा-

पूरे होंगे जनता से किए गए वायदे, सबसे ज्यादा करूंगा काम

संवाददाता

सीतामढ़ी : सीतामढ़ी लोकसभा क्षेत्र में जिस बाद का अंदेशा था, वही हुआ। जदयू के एनडीए समर्थित प्रबुद्ध प्रत्याशी के रूप में देवेश चन्द्र ठाकुर ने लोकसभा चुनाव के अपने पहले मैच में ही जीत का शानदार सिक्सर लगाते हुए अपने विरोधियों को परास्त कर दिया। सीतामढ़ी में लोकसभा क्षेत्र में श्री ठाकुर ने पहली बार में ही जीत दर्ज की है। 51,367 वोटों से राजद के डॉ.अर्जुन राय को हराया है। श्री ठाकुर इस साल पहली बार लोकसभा चुनाव लड़े। पहली बार में ही उन्होंने 5,15,719 वोट हासिल किए। वहीं, आरजेडी से डॉ.अर्जुन राय को 4,64,363 वोट मिले हैं। 2019 में जदयू के सुनील कुमार पिंटू ने राजद के अर्जुन राय को दो लाख 50 हजार 539 मतों से हराया था। वही, 2014 में रालोसपा के राम कुमार शर्मा विजयी रहे थे। उन्होंने आरजेडी के सीताराम यादव को हराया था। विजयश्री का प्रमाण-पत्र हासिल करने के बाद पत्रकारों से बातचीत में श्री ठाकुर ने कहा कि जनता से किए उनके सारे वायदे अब पूरे होंगे। सीतामढ़ी में भव्य सीता मंदिर बनेगा। उन्होंने जनता के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनकी उम्मीदों पर खरा उतरने का वचन दिया। साथ ही कहा कि अब तक जो भी सांसद बने हैं, उन सबसे वह ज्यादा काम करेंगे और सीतामढ़ी को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पटल पर एक नई विशिष्ट पहचान दिलाने का काम करेंगे। इस मौके पर उनके साथ पूर्व जिला पार्षद संजय कुमार झा सहित कई समर्थक मौजूद रहे। जबकि, उन्हें बधाई देने वालों में गविन्द नारायण पाठक, धर्मेन्द्र पाठक आदि के नाम शामिल हैं।

मिथिला डायरी

संभाल चुके हैं कई अहम जिम्मेदारियां : 3 जुलाई 1953 को सीतामढ़ी में जन्मे देवेश चंद्र ठाकुर पूर्व में बिहार विधान परिषद के अध्यक्ष रह चुके हैं। इसके अलावा वह बिहार सरकार में कैबिनेट मंत्री और बिहार विधान परिषद में जनता दल यूनाइटेड के उप नेता की भी जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। वह चार जिलों सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, वैशाली और शिवहर को मिलाकर गठित तिरहुत स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से बिहार विधान परिषद के लिए चार बार चुने गए थे।

चार बार बने विधान पार्षद : श्री ठाकुर की प्राथमिक शिक्षा तो अपने गांव से ही हुई। हालांकि, बाद में वे पुणे के सैनिक स्कूल पहुंचे और फिर पुणे के ही फर्ग्यूसन कॉलेज से उच्च शिक्षा ग्रहण की। इसके बाद उन्होंने पुणे के ही आईएलएस लॉ कॉलेज से कानून की डिग्री ली। वह कभी सीधे जनता की अदालत में तो नहीं गए, स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से चार बाद एमएलसी जरूर चुने गए। उन्होंने राजनीति की शुरूआत साल 2002 में तिरहुत स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से एक निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में की थी। इसमें वह जीत गए और फिर जेडीयू में शामिल हो गए। वर्ष 2008 में वह दोबारा तिरहुत स्नातक सीट से एमएलसी का चुनाव लड़े और जीते। उसके बाद 2014 और फिर 2020 में भी अपनी जीत कायम रखी।

निराशा ही आपके जीवन का विष

गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली

प्रत्येक व्यक्ति के मन में एक प्रश्न बार-बार आता है कि मेरा जीवन धर्म क्या है? हमारे आध्यात्मिक और भौतिक जीवन में चार सिद्धांत बताये गये हैं- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। सबसे पहला स्थान धर्म को दिया गया है। धर्म अर्थात वे नियम, जो जीवन के आधारभूत सिद्धान्त हों। धर्म के सिद्धांत पर चलकर ही मनुष्य अपने जीवन में अर्थ की प्राप्ति कर सकता है। अपने जीवन में काम अर्थात क्रिया को जाग्रत कर सकता है। पूर्व जन्म के कर्म बन्धनों का नाश कर अपने क्रियमाण जाग्रत कर सकता है। अर्थ का मूल भाव है जीवन के लक्ष्य। जीवन के लक्ष्य में आध्यात्मिक भाव और भौतिक भाव सदैव परस्पर जुड़े हैं।

गुरु शिष्य को उस अध्यात्म मार्ग पर ले जाते हैं, जिससे जीवन के सभी पक्ष अर्थ, काम और मोक्ष अर्थात मुक्ति का भाव, स्वतंत्रता का भाव उसके जीवन में स्थापित हो। कई शिष्य मुझसे पूछते हैं कि मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? मैं यह बनना चाहता हूं, मैं यह प्राप्त करना चाहता हूं, उच्चतम स्थिति प्राप्त करना चाहता हूं, संसार के सारे सुख भोगना चाहता हूं। मैं मुस्कुराकर आशीर्वाद भी देता हूं और कहता हूं 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।'

वह जो आपकी भावनाएं हैं, यही आपके जीवन का आधार है और इन भावनात्मक प्रश्नों के सम्बन्ध में हमारे ऋषियों ने उपनिषदों में कहा, ब्रह्मा ने वेदों के माध्यम से व्यक्त किया और भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा। देखो भाई, धर्म है सनातन और जो सनातन है, वह सत्य है और जो सत्य पचास हजार साल पहले था, वही सत्य आज भी और पचास हजार साल बाद सार्थक रहेगा।

सात धर्म, नियम परम आवश्यक

धर्म का अर्थ है नियम। जीवन में जब विशुद्ध नियम होते हैं तो उनकी पालना करने से मनुष्य को अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति अवश्य होती है। वह अपने जीवन में कभी भी विचलित नहीं होता। सात नियम हैं। सात नियम धर्म का ही स्वरूप हैं। इन नियमों का जो पालन करता है, वही श्रेष्ठ साधक और शिष्य है।

याद रखना, धर्म का अर्थ है नियम और जो नियम का नियमित रूप से, नियम का नित्य पालन करता है, वह संसार चक्र में कभी पीड़ित नहीं होता, परास्त नहीं होता, कभी भ्रमित नहीं होता। मैंने इन नियमों को शिष्य धर्म के रूप में स्थापित करने का विचार किया है। केवल शिष्य के लिए नहीं, प्रत्येक व्यक्ति के लिये सात धर्म, नियम परम आवश्यक हैं।

प्रथम धर्म नियम - अपनी आत्मा को जानना, अपने मन को जानो। सदैव अपने अन्तर्मन में प्रवेश करने का प्रयास करते रहना। अन्तर्मन में ही ब्रह्म का वास है और सभी प्रकार की प्रसन्नता का केन्द्र है। ध्यान के माध्यम से, साधना के माध्यम से उस अन्तर्मन में उतरो, प्रश्नों के उत्तर अवश्य प्राप्त होंगे।

दूसरा धर्म नियम - व्यर्थ के बंधन तोड़ना। विचार करो, क्यों आपने अपने जीवन में सैकड़ों बंधन व्यर्थ के बांध रखे हैं? उनसे मुक्त होने के लिये आपको ही प्रयास करना पड़ेगा। व्यर्थ के बंधन मन और आत्मा पर बोझ ही डालते हैं। तोड़ो व्यर्थ के बंधन।

तीसरा धर्म नियम - धरती अर्थात स्थूल को जीतना। अरे भाई! स्थूल को जीतने का अर्थ है - उससे ऊपर उठना। यदि हम स्थूल चीजों से प्रभावित हो जाएंगे और उनसे अधिक मोह करने लगेंगे तो सबसे बड़ा बंधन हो जायेगा।

चौथा धर्म नियम - आकाश को देखना, बाहुता विशेष बात है। आकाश को देखने का मतलब है अपने इष्ट को देखना। वह इष्ट निराकार रूप में, ब्रह्म रूप में विद्यमान है। उस ब्रह्म को अपने भीतर भी अनुभव करना और बाहर भी अनुभव करना।

पांचवां धर्म नियम है - जगत में रहकर साक्षी भाव से रहना। यह संसार चक्र तो लाखों वर्षों से चल रहा है, हम तो कुछ काल के लिये आये हैं। यदि इसमें बहुत अधिक इन्वॉल्व हो गये तो तुम्हारी आत्मा कभी तृप्त नहीं हो सकेगी। जीवन अशांत हो जायेगा। जो चल रहा है, उसे श्रेष्ठ करने का प्रयत्न करें। पर अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को ही उसमें डूबा नहीं दें। आपके व्यक्तित्व के हजार गुण स्वरूप हैं। अपने व्यक्तित्व के सभी आयामों को देखें।

छठा धर्म नियम है - मस्त रहना, यह नियम थोड़ा कठिन है। आपने आनन्द और मस्ती को अपने कुछ कार्यों से, धन-सम्पत्ति से, दूसरों से आगे निकलने की क्रिया से जोड़ दिया है। इस क्रिया में केवल भाग-दौड़ ही रहेगी, मस्ती कहां से आयेगी? क्रिया करते रहें, पर आनन्द के साथ करें, अनमने मन के साथ नहीं। जब मस्त रहना, आनन्द में रहना आपका स्वभाव बन जायेगा तो हृदय की मुस्कान मुख मण्डल से भी झलकेगी और ध्यान रखना, प्रसन्न व्यक्ति से मिलकर हर व्यक्ति प्रसन्न होता है। प्रसन्न रहने वाले के जीवन में ही मित्र-सहयोगी बनते हैं। केवल चिन्ता करते रहोगे, दुःखी होते रहोगे तो फिर निराशा ही आयेगी और आप जानते हो कि निराशा जीवन का विष है। निराशा आपके स्वास्थ्य को खा जाती है। अरे भाई! 2-4 बाधाएं आ गईं तो क्या? प्रसन्न मन से चुनौतियों को स्वीकार करो। प्रसन्न मन से क्रिया करो। बाधाओं को चुनौती समझकर हल करो प्रसन्न मन से।

सांतवां धर्म नियम है सत्यता, दया, संयम, अक्रोध और मौन धारण करना। पंच सिद्धान्तों पर यह धर्म थोड़ा कठिन लगता है, लेकिन जब आपके मन में ये भाव स्थापित होते हैं तो आपके व्यक्तित्व की आभा प्रकाशित होती है। आपके भीतर से व्यर्थ के निराशाजनक भाव समाप्त हो जाते हैं।

असत्य मार्ग पर किसी की उन्नति नहीं होती..., क्रोध से कोई कार्य पूरा नहीं होता, कार्य पूरा होता है संयम से। अपने स्वयं के प्रति दया रखें, दूसरों के प्रति भी दया रखें। दया कठोर मन को तरल बना देती है। तरलता में सरसता है, कठोरता में रुकाव है।

मौन रहना भी बड़ी साधना

क्यों व्यर्थ का बोलें, वाक्शक्ति का उचित उपयोग करें और मौन रहना बहुत बड़ी साधना है। इन सप्त गुणों के साथ, सप्त नियमों के साथ एक नियम और धारण कर लेना। अपने पूरे जीवन में बाल सुलभ पवित्रता रखना, सदैव सीखने की प्रवृत्ति रखना, उत्सुकता रखना, आशा रखना। चीजों को समझने, सीखने का भाव रखना। इस बाल सुलभ पवित्रता में शिष्यता है, इसी में प्रचण्ड शक्ति है, यही ईश्वरीय शक्ति है।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

गर्मी में सेहत को शीतलता देती है छांछ, जानिए फायदे

गर्मी के मौसम में छांछ (बटरमिल्क) का सेवन अत्यंत लाभकारी होता है। दही को फेंटकर और उसमें पानी मिलाकर तैयार की जाने वाली यह पेय प्राकृतिक रूप से प्रोबायोटिक होती है और इसमें कई महत्वपूर्ण पोषक तत्व होते हैं। आइए जानते हैं इसके फायदे-

शीतलता प्रदान करना: गर्मी में छांछ पीने से शरीर को ठंडक मिलती है। यह शरीर की आंतरिक गर्मी को कम करता है और उसे ठंडा रखता है।

हाइड्रेशन: छांछ शरीर में जल संतुलन बनाए रखने में मदद करती है। गर्मियों में पसीने के कारण शरीर से अधिक मात्रा में पानी निकल जाता है, जिससे डिहाइड्रेशन का खतरा रहता है। छांछ पीने से इस समस्या से बचा जा सकता है।

पाचन में सुधार: छांछ पाचन तंत्र के लिए अत्यंत लाभकारी होती है। इसमें मौजूद प्रोबायोटिक्स पाचन में मदद करते हैं और पेट की समस्याओं से राहत दिलाते हैं।

ऊर्जा का स्रोत: छांछ में लैक्टोज, प्रोटीन और विटामिन बी12 होते हैं, जो ऊर्जा के अच्छे स्रोत होते हैं और थकान को दूर करते हैं।

त्वचा के लिए लाभकारी: गर्मी में छांछ पीने से त्वचा को भी लाभ होता है। यह त्वचा को अंदर से हाइड्रेट रखती है और उसे चमकदार बनाती है।

पोषक तत्वों का स्रोत: छांछ में कैल्शियम, पोटैशियम, विटामिन बी12, और प्रोटीन होते हैं। ये सभी तत्व हड्डियों, मांसपेशियों और सामान्य स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं।

वजन प्रबंधन: छांछ कैलोरी में कम और पोषक तत्वों में उच्च होती है, जिससे यह वजन प्रबंधन में सहायक हो सकती है। यह भूख को नियंत्रित करती है और अधिक खाने से बचाती है।

ब्लड प्रेशर कंट्रोल : छांछ में मौजूद पोटैशियम ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में मदद करता है।

हृदय स्वास्थ्य: छांछ में कम वसा होती है और यह कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करती है, जिससे हृदय स्वास्थ्य बेहतर होता है।

मसूड़ों और दांतों के लिए फायदेमंद: छांछ में कैल्शियम की उच्च मात्रा होती है, जो मसूड़ों और दांतों को मजबूत बनाती है। **- प्रस्तुति : विकास**

13 दिन का पक्ष और मानसून काल

ज्योतिषीय विश्लेषण

- बी. कृष्णा नारायण -

इस बार सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश 22 जून भारतीय समयानुसार, रात्रि के 00 :06 :07 बजे होगा। सूर्य के आर्द्र नक्षत्र में प्रवेश के अलावा सूर्य का धनु राशि में प्रवेश, जिसे की मेघ के गर्भधारण करने का काल कहा जाता है। यह भी मानसून के बारिश को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है। सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश से मानसून की शुरूआत होती है, जो कि सूर्य के स्वाति नक्षत्र में गोचर तक जारी रहता है। आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र तक सूर्य की यात्रा में अन्य ग्रहों, वायु, वारों और तिथियों द्वारा बनने वाले योग यह निर्धारित करते हैं कि कृषि हेतु भरपूर जल की प्राप्ति होगी, कम बारिश होगी या सूखा होगा। नारद पुराण, रामचरितमानस और प्रख्यात विद्वान आचार्य वराह मिहिर ने इन योगों के आधार पर बारिश फल कथन की विस्तृत चर्चा की है।

देश, काल और पात्र के हिसाब से समयानुसार इन योगों को देखा जाना चाहिए।

अब बात सूर्य के आद्रा नक्षत्र में प्रवेश की:-

क्रम से नकारात्मक और सकारात्मक बिंदुओं को जानेंगे,

सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के समय -

1 - वार - शुक्रवार - अच्छी बारिश
2 - योग - शुक्ल - अच्छी बारिश
3 - करण - वव - अच्छी बारिश
4 - रात में आर्द्रा प्रवेश - अच्छी बारिश
5 - चन्द्रमा मूल में - सामान्य से कम बारिश, बादल फटने, ठनका गिरने की स्थिति।
6 -चन्द्रमा का अग्नि तत्व राशि में होना - मेघ बनेंगे पर बरसेंगे नहीं।
7 - शुक्र और बुध का, अगस्त के दूसरे सप्ताह के बाद, एक दूसरे से दूरी बनाये रखना, बारिश को बाधित करने का योग है।
8 - सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के समय मीन लग्न का उदय होना- अच्छी बारिश का संकेत है।
9 - शुक्र और बुध एक दूसरे के साथ होकर का केंद्र में होना अच्छी बारिश का योग है, लेकिन वायु तत्व राशि में होना बारिश के साथ साथ चक्रवातीय तूफान की भी स्थिति है।
10 - शुक्र, बुध और चन्द्रमा इन तीनों की कोणीय स्थिति भी अच्छी बारिश की स्थिति बना रहे हैं।
11 - सम्पूर्ण मानसून काल में 30 जून से 10 जुलाई तक का समय, 3 अगस्त से 19 अगस्त तक का समय तथा 1 अक्टूबर से 10 अक्टूबर तक का समय बारिश को लेकर सबसे अनुकूल समय होगा।
12 - शुक्र का अनुकूल नक्षत्र में गोचर जून के द्वितीय सप्ताह से ही अच्छी बारिश की स्थिति बना रहे हैं।
13 - अगस्त के पहले सप्ताह में बुध, शुक्र का शनि से दृष्ट हो जाना तथा अगस्त के अंतिम सप्ताह में शुक्र का शनि से दृष्ट हो जाना- बारिश के बाधित हो जाने की स्थिति है।
14 - जुलाई, अगस्त माह की अपेक्षा सितंबर माह में कम बारिश का संकेत है।
15 - जुलाई के तीसरे सप्ताह में शनि और सूर्य की वजह से बारिश के रफ़्तार में थोड़े दिनों का ब्रेक लगेगा। इस ब्रेक की वजह से देश के उत्तरी और उत्तरमध्य क्षेत्र में बारिश में गिरावट दर्ज की जा सकती है।

इसके अलावा, प्राकृतिक उत्पात के साथ साथ चक्रवातीय तूफान, भारी बारिश, आगजनी, बादल फटना आदि के लिए अनुकूल माहौल बनाने वाले कुछ अन्य योग भी निर्मित हो रहे हैं, जो निम्नलिखित हैं-

1 - वर्ष प्रवेश कुंडली के अनुसार शुक्र और चंद्र के बीच सूर्य और राहु का होना तथा बुध और शुक्र के बीच नजदीकी संबंध का अभाव होना, सिंह राशि का शनि, मंगल के प्रभाव में होना तथा राशि स्वामी का राहु के साथ होकर राशि से अष्टम भाव में होना, इस वर्ष पश्चिम भाग तथा दक्षिण पूर्वी भाग में भूगर्भ जल स्तर में गिरावट और सूखा संभावित क्षेत्र में वृद्धि की स्थिति तथा पहाड़ी एवं सुनसान प्रदेश में आगजनी की घटना में वृद्धि की स्थिति बना रहे हैं।

2 - सूर्य के आर्द्र नक्षत्र में प्रवेश के पहले बुध का वायु तत्व राशि में शुक्र के नजदीक जाना 10 जून 15 जून के बीच मौसम में अप्रत्याशित परिवर्तन के साथ साथ चक्रवातीय तूफान, तेज बारिश के लिए अनुकूल माहौल बनाने वाला समय है।

3 - आषाढ़ कृष्ण पक्ष का 13 दिन का होना (23 जून - 5 जुलाई) तथा इसी समय शनि का वक्री होना, मंगल, गुरु और बुध की गति में परिवर्तन होना पश्चिमी हिस्से में चक्रवातीय तूफान, तेज बारिश के साथ साथ भूकंप के लिए भी अनुकूल माहौल बना रहे हैं।

4 - अगस्त के पहले सप्ताह में शुक्र, बुध और चंद्र का अनुकूल नाड़ी में होकर जल तत्व राशि में होना तथा अग्नि तत्व राशि के मंगल से दृष्ट होना पूर्वी और उत्तरी भाग में भारी बारिश के साथ बदल फटने, बिजली गिरने के साथ साथ प्राकृतिक उत्पात कि स्थिति बना रहे हैं।

5 - 28 सितंबर को सूर्य का प्रवेश हथिया में होगा। कहते हैं कि यदि हथिया नक्षत्र में अच्छी बारिश हो गयी तो कम से कम अगले तीन बर्षों के लिए भूगर्भ जल की सारी समस्याएं समाप्त हो जाती है। हथिया में सूर्य के रहते 29 सितंबर से 1 अक्टूबर का समय अच्छी बारिश का संकेत दे रहे हैं।

6 - सूर्य और केतु के साथ अन्य ग्रहों का खास जुड़ाव अक्टूबर के दूसरे और तीसरे सप्ताह में दक्षिण तथा दक्षिणोत्तर भाग में प्राकृतिक उत्पात की स्थिति बना रहे हैं।

कुल मिलाकर देखें तो मेघों के गर्भ धारण का समय, वर्ष प्रतिपदा का समय, सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश का समय और इसके साथ ग्रहों का एक दूसरे के साथ बनने वाले जो संबंध हैं वह अच्छे मानसून का दे रहा है।

(लेखिका वरिष्ठ ज्योतिषी, योग और आध्यात्मिक चिंतक हैं।)

अरे! हम एडवांस मच्छर हैं

- डॉ.सविता मिश्रा मागधी -
बेंगलुरू

मच्छरों की मीटिंग चल थी। एक हट्टी-कट्टी नेता टाइप की मच्छरनी सभा को संबोधित कर रही थी, 'जोश-खरोंच से जीने वाली युवा मच्छरनियों, मेरी बातों को ध्यान से सुनो और आत्मसात करने की कोशिश करना। हम मादा मच्छरों की प्रजाति मनुष्य के खून पर जीवित है।'

- 'क्यों; मनुष्य का खून ही क्यों? हम उसके बिना भी जीवित रह सकते हैं।' एक युवा मच्छर ने उसकी बात बीच में ही काट दी।

-'हम मच्छरनियां तुम नर मच्छरों की तरह नहीं हैं कि पेड़ का रस पीकर संतोष कर लें। अपनी प्रजाति बढ़ाने के लिए हमें लार्वा को जन्म देना होता है, जिसके लिए हमें प्रोटीन की जरूरत पड़ती है। हम लोग एक बार में सौ से दो सौ अंडे देने की क्षमता रखते हैं।' नेता मच्छरनी ने खा जाने वाली नजरों से युवा मच्छर की ओर देखा।

एक बुजुर्ग मच्छर ने युवा का पक्ष लिया, 'मनुष्य का रक्त न पीने से मर नहीं जाओगी, जीवन-यापन के लिए जानवरों का खून पीती ही हो। अरे! तुम लोग चूहा, सांप, मेंढक को भी नहीं छोड़ती। इन्हीं से अपना काम क्यों नहीं चला लेती?'

-'जिसने अमृत का रसपान किया हो, वह नींबू का शरबत चखना भी नहीं चाहता। मनुष्य का लहू सभी जीवों के लहू से मीठा और उत्तम क्वालिटी का होता है। इनके रक्त से हमें एक साथ शर्करा, ग्लूकोज सुक्रोज, फ्रुक्टोज और प्रोटीन मिल जाता है। फिर, मनुष्य की चमड़ी इतनी मुलायम होती है कि डंक चुभोने में मजा आ जाता है। इनके शरीर से निकलने वाली लैक्टिक और अमोनिया सुगंध हमें मजबूर कर देती है, हम स्वयं को रोक ही नहीं पाते, फिर पहाड़ जैसे शरीर से थोड़ा-सा रक्तपान करने में इनका क्या बिगड़ता है?'

- 'हम नर मच्छरों को तुम्हारी जान की फिक्र है, तभी राय दे रहा हूं। मनुष्य तुम्हें मारने के लिए भांति-भाति का जहरीला उपाय कर रहा है।'

-'क्या उपाय कर रहा है? हिट, ऑल आउट, गुड नाइट के साथ क्वायल आदि का उपयोग करता है।

- 'करने दो। हम अपने लार्वा को उससे ज्यादा एडवांस पैदा करते हैं। मनुष्य डाल-डाल तो हम पात-पात। दलदलिया बुखार जानते हो?' अरे! वही जिसे मलेरिया कहते हैं। मादा एनोफिलीज मच्छर का काम है उनके शरीर में अपना लार्वा छोड़ फैलाने का। एडीज मादा मच्छरों ने डेंगू, चिकनगुया आदि जानलेवा बीमारियों से उनकी नींद उड़ा रखी है। हमलोग अपने शरीर से तीन गुणा अधिक खून पीने की क्षमता रखते हैं।'

-'क्या जरूरी है तुम्हें इतने अंडे देने की? पर्यावरण बिगाड़ रही हो।' एक अन्य मच्छर बोल पड़ा।

- 'वाह-वाह, मनुष्य पर्यावरण बिगाड़ रहा है तो कुछ नहीं। जंगल के जंगल काट डाले, पहाड़ों को चकनाचूर कर रहा है तो कुछ नहीं। हमारी प्रजाति पर्यावरण संतुलित करती है। आप बताओ, हम अपना लार्वा कहां देते हैं? पानी में या पानी के आस-पास। हमारे लार्वा पानी में कार्बनिक पदार्थों को फिल्टर करते हैं। सड़ती पत्तियों और अन्य सूक्ष्म जीवों को गला देते हैं। नाइट्रोजन और अन्य पोषक तत्वों को उत्सर्जित करते है। क्या यार...। लगता है तुम मनुष्य बन गए हो, अपने समुदाय का गला रेतने पर तुल पड़े।'

उनकी एक युवती बोली, अरे! हम एडवांस मच्छर हैं,-

'सुन साहिबा सुन, हम मच्छरों पर चढ़ा जुनून।
तू कुछ भी कर ले, हम तो छक के पिएंगे खून।'

पेज- 1 का शेष

देश में फिर...

ताने दे रहे हैं। लोगों को विश्वास ही नहीं हो रहा कि ऐसा भी हो सकता है। चार जून को लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद से ही अयोध्यावासी कशमकश में हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले उनके रिश्तेदार, मित्र और अन्य लोग रोज फोन करके अलग-अलग सवाल पूछ रहे हैं। सब यही जानना चाहते हैं कि आखिर ऐसा हो कैसे गया? वह भी तब, जब 500 वर्षों की लंबी प्रतीक्षा के बाद भाजपा के ही राज में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों अयोध्या में भव्य मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हुई हो। पिछले कई दिनों से एक संत का वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें वह रोते हुए कहते दिख रहे हैं कि पूरे भारत में भाजपा हार जाती तो कोई बात नहीं थी। अयोध्या जीतती तो पूरी दुनिया जय श्रीराम कहती। आज लग रहा कि अयोध्यावासियों ने फिर से को त्रेता लौटा दिया, जब मां सीता और प्रभु श्रीराम को 14 वर्ष का वनवास कर दिया गया था। हालांकि, अयोध्यावासी इस हार का कारण वहां के भाजपा प्रत्याशी को मान रहे हैं, जिनसे लोगों में काफी नाराजगी थी। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में सपा उम्मीदवार के समर्थन में दलित वोटों के ध्रुवीकरण को भी बड़ा कारण माना जा रहा है।

सभी दंत समस्याओं का एक समाधान
डॉ. नरेन्द्र मेमोरियल डेंटल सेंटर
138 को-आपरेटिव कॉलोनी (बोकारो)
दांत एवं मुंह
संबंधी सभी बीमारियों के
इलाज की पूर्ण सुविधा।
समय : सुबह 9.30 से दोपहर 2.30 बजे तक
संध्या 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक
(शनिवार अवकाश)
डा. निकेत चौधरी (संध्या में)

मोदी की हैट्रिक पर बधाइयों का लगा तांता, उपराष्ट्रपति ने बताया अभूतपूर्व

पिछले छह दशकों में पहली बार किसी पीएम को मिला तीसरा कार्यकाल

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : 18वीं लोकसभा के लिए प्रधानमंत्री के रूप में एक बार फिर नरेन्द्र मोदी के चुने जाने पर देश-विदेश से उन्हें बधाई देने वालों का तांता लग गया है। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने मौजूदा सरकार के तीसरे कार्यकाल के ऐतिहासिक महत्व का उल्लेख किया, जो पिछले छह दशकों में अभूतपूर्व है। उन्होंने इस तरह की उपलब्धि की दुर्लभता पर जोर दिया। उपराष्ट्रपति ने आगे कहा, "1962 के बाद यह पहली बार है कि किसी प्रधानमंत्री को तीसरा कार्यकाल मिला है।"

श्री धनखड़ ने उपराष्ट्रपति आवास में राज्य सभा इंटर्नशिप कार्यक्रम के प्रतिभागियों को संबोधित किया। उन्होंने प्रशिक्षुओं से अनुरोध किया कि वे अपने विचार व्यक्त करने के लिए सोशल मीडिया की शक्ति का उपयोग करें और लोकतंत्र में हानिकारक प्रवृत्तियों को लेकर सावधान रहें। उपराष्ट्रपति ने सकारात्मक विकास के लिए संसद में रचनात्मक बहस, संवाद और चर्चा की भूमिका पर जोर दिया। इसके अलावा श्री धनखड़ ने प्रशिक्षुओं से अनुरोध किया कि अगर वे इन सिद्धांतों से कोई विचलन देखते हैं, तो वे जनता की राय जुटाएं। उन्होंने आगे आह्वान किया कि भारत एक निष्क्रिय महाशक्ति नहीं है, बल्कि एक गतिशील देश है जो हर दिन और हर क्षण आगे बढ़ रहा है। उपराष्ट्रपति ने स्पष्टता के लिए भारतीय संविधान का अध्ययन करने के महत्व पर जोर दिया। श्री धनखड़ ने प्रशिक्षुओं को सलाह दी कि जब भी कोई संदेह हो तो वे भारतीय संविधान को पढ़ें।

'संसदीय स्टार्टअप' एक प्रेरणा: धनखड़

उपराष्ट्रपति ने इंटर्नशिप कार्यक्रम को एक ऐसा 'संसदीय स्टार्टअप' बताया, जो देश की लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से जुड़ने के लिए एक नई दिशा और प्रेरणा प्रदान करेगा। श्री धनखड़ ने इस बात को रेखांकित किया कि कैसे नागरिक इसमें अप्रत्यक्ष रूप से हिस्सा ले सकते हैं और संसद सदस्य बने बिना भी याचिकाओं के माध्यम से सार्वजनिक मुद्दों को उठा सकते हैं। इस अवसर पर डॉ. सुदेश धनखड़, राज्य सभा के उपसभापति हरिवंश, राज्य सभा के महासचिव पीसी मोदी, उपराष्ट्रपति के सचिव सुनील कुमार गुप्ता, राज्यसभा के सचिव राजित पुनहानी और अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

विभिन्न देशों के राष्ट्र प्रमुखों ने दी बधाई

भारत-इजराइल संबंधों में आएगी मजबूती : नेतन्याहू

तीसरी बार प्रधानमंत्री चुने जाने पर नरेन्द्र मोदी को विभिन्न देशों के राष्ट्र प्रमुखों ने बधाई व शुभकामनाएं दी हैं। इजराइल के प्रधानमंत्री महामहिम बेंजामिन नेतन्याहू ने उनके पुनः निर्वाचित होने पर बधाई दी। भारत के लोगों के प्रति उनकी हार्दिक शुभकामनाओं और गहरे स्नेह के लिए उन्हें धन्यवाद देते हुए प्रधानमंत्री ने पिछले कुछ वर्षों में भारत-इजराइल संबंधों को मजबूत बनाने में उनके योगदान का उल्लेख किया। दोनों नेताओं ने सभी क्षेत्रों में भारत-इजराइल रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। दोनों नेता संपर्क में बने रहने पर सहमत हुए।

भारत-आर्मेनिया में रहेगा आपसी सहयोग : निकोल

आर्मेनिया के प्रधानमंत्री निकोल पाशिनयान ने आज प्रधानमंत्री श्री मोदी को फोन करके हाल ही में संपन्न हुए आम चुनावों में उनकी जीत पर बधाई दी। प्रधानमंत्री मोदी ने प्रधानमंत्री पाशिनयान को धन्यवाद दिया और दोनों देशों के बीच सभी क्षेत्रों में बढ़ते सहयोग को जारी रखने की वचनबद्धता जताई। दोनों नेताओं ने भारत-आर्मेनिया द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत बनाने की दिशा में कार्य करने की अपनी प्रतिबद्धता की भी पुष्टि की। दोनों नेताओं ने आपसी संपर्कों को बनाए रखने पर भी सहमति जताई।

यूक्रेन के साथ सशक्त होगी साझेदारी : जेलेंस्की

यूक्रेन के राष्ट्रपति राष्ट्रपति वोलोडिमिर जेलेंस्की ने प्रधानमंत्री मोदी को फोन करके हाल ही में हुए आम चुनावों में मिली सफलता के लिए बधाई दी है। प्रधानमंत्री ने उन्हें धन्यवाद देते हुए यूक्रेन के साथ अपनी साझेदारी को और मजबूत करने की भारत की प्रतिबद्धता दोहराई। दोनों नेताओं ने निरंतर घनिष्ठ संपर्क की आवश्यकता पर बात की और दोनों देशों के लोगों के हित के लिए परस्पर लाभकारी सहयोग को नए क्षेत्रों में आगे बढ़ाने पर जोर दिया। यूक्रेन में चल रहे संघर्ष पर प्रधानमंत्री ने भारत के जन-केंद्रित दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला तथा वार्ता और कूटनीति के माध्यम से संघर्ष के शीघ्र, शांतिपूर्ण और स्थायी समाधान के लिए सभी प्रयासों के प्रति भारत के समर्थन को दोहराया। दोनों नेताओं ने एक दूसरे के साथ संपर्क में रहने पर सहमति व्यक्त की।

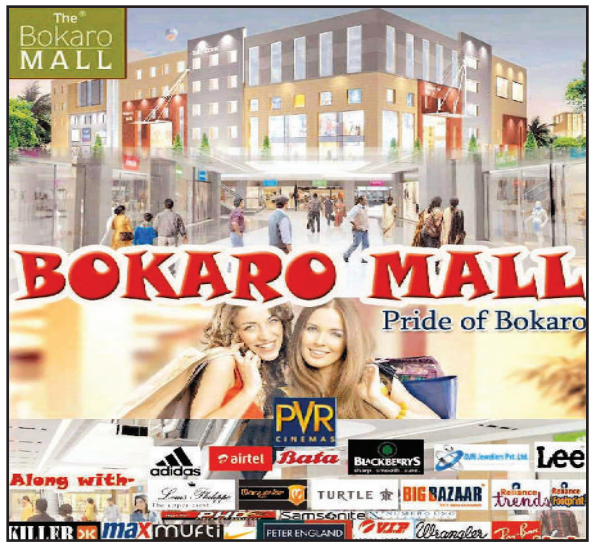

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा डीबी कॉर्प लिमिटेड, भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, गोविन्दपुर रोड, जीके आश्रम, धनबाद से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **कैप्टन संजय,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)